A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

सिराज एवं सुकेत क्षेत्रों की देव संस्कृति के संरक्षण में लोक वाद्य वादकों का योगदान

Rohit Kumar
Research Scholar, Department of Music, Himachal Pradesh university, Shimla

Read the Article Online

OPEN ACCESS

Cite this Article

Published on 02 May, 2026

Kumar, R. (2026). Siraj Evam Suket Kshetron Ki Dev Sanskriti Ke Sanrakshan Mein Lok Vadya Vadakon Ka Yogdaan. Swar Sindhu, 14(1), 157-162

सार

सिराज एवं सुकेत क्षेत्र का अधिकाँश भाग पहाड़ी है ,जो अपनी समृद्ध लोक सांगीतिक परम्पराओं की चादर ओढ़े हुए है | इन दोनों क्षेत्रों की सभी प्रकार की लोक सांगीतिक परम्पराएँ ग्रामीण परिवेश के सांस्कृतिक ,धार्मिक तथा सामाजिक जीवन का बहुत महत्वपूर्ण अंग होती हैं | यहाँ के लोकवाद्य केवल मात्र मनोरंजन से ही नहीं जुड़े होते बल्कि धार्मिक ,सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन में भी इनका बड़ा महत्व होता है | इस शोध पत्र में सिराज एवं सुकेत क्षेत्रों की देव संस्कृति के संरक्षण में लोक वाद्य वादकों का योगदान विषय पर गहन अध्ययन प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है | इस अध्ययन प्रक्रिया से हमें यह ज्ञात होता है कि इन लोक वादक कलाकारों ने केवल मात्र परम्परा का संरक्षण ही नहीं किया, आपितु समय के बदलते स्वरूप के साथ-साथ लोक सांगीतिक परम्परा तथा देव संस्कृति को विशुद्ध रूप में नई पीढ़ी तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण काम भी किया है |

कुंजी ,शब्द: सांस्कृतिक विरासत ,सिराज ,सुकेत , देव संस्कृति , लोक वाद्य ,लोक वादक ,संरक्षण ,प्रचार-प्रसार ,लोक संगीत

भूमिका

लोक संगीत एक ऐसी महत्वपूर्ण कला है जो किसी भी सामाजिक परिवेश का आईना मानी जाती है | लोक संगीत में मात्र ध्वनियों का ही समावेश नहीं होता, बल्कि इसमें समाज में रहने वाले सभी वर्गों के लोगों के सामूहिक अनुभव ,उनके मन में चलने वाली भावनाएं तथा आपसी विश्वासों का मिश्रण होता है | सिराज एवं सुकेत इन दोनों क्षेत्रों में प्रचलित लोक संगीत अपनी सरलता ,गहराई तथा सामूहिक सहभागिता के कारण अपना विशेष स्थान रखता है | यहाँ के लोक संगीत के विषय में कहा गया है कि जैसे -जैसे प्राकृतिक परिवेश ,धार्मिक मान्यताओं ,लोक विश्वासों तथा सामाजिक जीवन का विकास हुआ ठीक उसी प्रकार लोक संगीत भी निरंतर विकासशील होता चला गया |

सिराज एवं सुकेत एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ के लोक वाद्यों का अपना महत्वपूर्ण स्थान होता है| यहाँ के लोक वाद्यों जैसे नगारा, ढोल, करनाल, रणसिंगा ,शहनाई इत्यादि का प्रयोग इन दोनों क्षेत्रों में होने वाले सभी धर्मिक उत्सवों ,पारम्परिक आयोजनों ,तथा तीज- त्योहारों इत्यादि में प्रचुर मात्र में होता है | इन लोकवाद्यों को बजाने वाले लोक वादक इस अनोखी कला को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे ले जाने का काम करते हैं | इन लोक वाद्यों और इनके वादक कलाकारों के बगैर यहाँ का लोक संगीत अपने आप में काफी अधुरा सा लगने लगता है| जिस प्रकार लोक संगीत की सभी परम्पराएँ निरंतर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आगे बढ़ रही है ठीक उसी तरह से लोक वाद्य यंत्रों से जुडी परम्परा भी लगातार आगे बढती चली जा

इन दोनों क्षेत्रों के अलग -अलग स्थानों में अनेक ऐसे कुशल लोक वादक कलाकार है जो अपने वादन में विभिन्न -विभिन्न रसों का प्रदर्शन करने में काफी माहिर होते हैं | बहुत सारे लोक वादक कलाकारों के द्वारा जब किसी विशेष अवसर के समय काफी सारे लोक वाद्यों का वादन किया जाता है ,तो ऐसा आभास होता है कि मन उल्लास और ख़ुशी से झूम उठता है | सिराज और सुकेत क्षेत्र में लोग किसी तीज, त्यौहार तथा पर्व इतियादी के समय में सभी प्रकार के लोक वाद्यों की धूनो पर गोलाकार ढंग में खड़े होकर नृत्य करते है | इन वाद्यों में नगारा,ढोल ,दमामा ,ढोलक ,खंजरी ,चिमटा ,शहनाई, करनाल रणसिंगा इतियादी आते है | सिराज एवं सुकेत इन दोनों क्षेत्रों के लोक संगीत में प्रयुक्त इन लोक वाद्यों पर जब अलग -अलग ताल बजती है और इसके साथ नृत्य होता है तो इससे सभी लोगों का मन अति प्रसन्न हो उठता है | इन लोक वाद्यों के वादन के साथ-साथ अपनी स्थानीय भाषा में लोकगीत भी गाते है जो सुनने में काफी अच्छे लगते हैं |

देव संस्कृति

हिमाचल प्रदेश को देवभूमि के नाम से जाना जाता है | इसी प्रकार सिराज एवं सुकेत भी दोनों ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ अनेक प्रकार के देवी -देवता वास करते है | यहाँ की देव संस्कृति अनूठी और काफी लोकप्रिय है | इन दोनों क्षेत्रों के देवी देवताओं की पूजा के समय अनेक प्रकार के पारम्परिक लोक

वाद्यों का भी प्रयोग होता है | देवता जी के देव कार्यों में पारम्परिक लोकवाद्यों की गूंज वातावरण को और भी ज्यादा भक्तिमय बनाने का काम करती है | देवता जी के 'गूर' का खेलना ,देवता का एक स्थान से दुसरे स्थान को आना या जाना तथा देवताओं के नृत्य इतियादी सभी क्षणों में हमेशा ही ढोल ,नगारों ,करनाल तथा रणसिंगा इतियादी का वादन होता है | इस तरह का लोकसंगीत अध्यात्मिक भावनाओं से ओत -प्रोत होता है और सम्पूर्ण समाज को एक सूत्र में जोड़े रखता है | इन दोनों क्षेत्रों के हरेक देवी एवं देवताओं के साथ लोक वादकों के समूह होते है जो विभिन -विभिन्न प्रकार के लोक वाद्यों का वादन करते हैं | ये लोक कलाकार हर वक्त देव आस्था से जुडे रहते हैं और सभी प्रकार के देव कार्यों में अपनी अहम भूमिका निभाते हैं |

पारम्परिक लोक वाद्यों का स्वरुप

सिराज एवं सुकेत क्षेत्रों की देव परम्परा के निर्वहन में अलग -अलग प्रकार के लोक वाद्य प्रयोग में लाये जाते हैं | इन दोनों क्षेत्रों में जो लोक वाद्य प्रयोग होते हैं वे निम्नलिखित हैं :- ढोल ,नगारा ,शहनाई, बांसुरी, करनाल ,रणसिंगा, खंजरी ,चिमटा, गुझु,, इत्यादि | इन सभी लोक वाद्यों को शादी -ब्याह ,मेलों ,धर्मिर्क उत्सवों तथा धार्मिक अनुष्ठानों एवं विशेष सामाजिक कार्यक्रमों में भी बजाया जाता है ,जिससे इन सभी प्रकार के कार्यक्रमों में चार चाँद लग जाते हैं |

विषय चयन

सिराज एवं सुकेत क्षेत्रो की प्राचीन लोक संस्कृति पर भी धीरे -धीरे पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव पड़ने लगा है | इस वजह से मानव अपनी समृद्ध लोक संस्कृति , देव संस्कृति , मानवीय मूल्यों तथा सामाजिक एकता इतियादी को भूलता चला जा रहा है | इन सभी परिवर्तनों को ज्यादातर आज की युवा पीढ़ी में देखा गया है | क्यूंकि युवा पीढ़ी को इस बात का एहसास नहीं है कि हमें विरासत में कितनी सारी चीजें मिली है, जिनको हमें आगे बढाने के साथ -साथ संजो कर भी रखना है | वर्तमान समय में लोक वाद्यों तथा लोक वादकों का धीरे -धीरे लगातार पतन होता चला जा रहा है |

लोक वादकों की भूमिका

परम्परा के संवाहक

इन दोनों क्षेत्रों के लोक वाद्य वादक कई वर्षों से देव आस्था से जुड़े हुए हैं और एक पीढ़ी के बाद आने वाली अगली पीढ़ी तक इस कला को बढ़ावा दे रहे हैं | वे अपने अनुभव तथा अपना ज्ञान बांटने में लगातार निस्वार्थ भावना से लगे हुए हैं | देवता जी के आदेशानुसार ही ये अपना कार्य बड़ी ही इमानदारी से करते है |

सांस्कृतिक आयोजनों में सक्रिय भगीदारी

सिराज और सुकेत दोनों ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ पर देवी- देवताओं के अनेकों मंदिर है | इन सभी देवी- देवताओं के नाम पर पुरे साल भर अनेकों मेले, धार्मिक आयोजन ,धार्मिक अनुष्ठान इतियादी होते हैं | जिसमें यहाँ के लोक वाद्य वादक कलाकार अपनी महत्वपुर्ण भूमिका निभाते हैं | इसके अलावा लोगों के घरों में मनाये जाने वाले तीज त्योहारों में भी ये अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते हैं इनके बिना कोई भी कार्यक्रम चाहे वो धार्मिक हो, सांस्कृतिक हो या फिर राजनितिक हो अधूरे से महसूस होते हैं |

सामाजिक जागरूकता में सक्रिय भागीदारी

पारम्परिक लोक वाद्यों को बजाने वाले ये कलाकार संगीत कला के द्वारा अपनी प्राचीन लोक संस्कृति तथा अपनी देव परम्परा से जुडी हुई चीजों को सभी लोगों के बीच में रखते हैं | ये सभी लोक वाद्य वादक अपनी इस कला के माध्यम से सभी लोगों को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करते हैं |

आधुनिक मंचों पर प्रस्तुति

समय के बदलने के साथ -साथ देव परम्परा से जुड़े हुए लोक वाद्य वादक केवल मात्र दैविक कार्य में बजाने तक ही सिमित नहीं रहे हैं बल्कि इन कलाकारों को मंचों के माध्यम से अनेक कार्यक्रमों तथा समारोह में अपनी प्रस्तुति देने का मौका मिलता है | जिससे देव संस्कृति के प्रचार प्रसार में बढ़ोतरी हुई है |

संरक्षण व् नवाचार

देव परम्परा से जुड़े हुए लोक वाद्य वादक अपनी पारम्परिक धुनों को सहेज कर रखने का काम तो कर ही रहे हैं बल्कि अपनी -अपनी इच्छा के अनुरूप इनमें कुछ -कुछ बदलाव भी करते जा रहें हैं क्यूंकि इसका मुख्य कारण है कि नई पीढ़ी की रूचि में बढ़ोतरी होती रहे जिससे वो अपनी लोक संस्कृति से हमेशा जुड़े रहें |

उद्देशय

सिराज एवं सुकेत क्षेत्रों की देव परम्परा के संरक्षण में लोक वाद्य वादकों के योगदान का अध्ययन

अनुसंधान कार्य का क्षेत्र

शोध कार्य करने के लिए हिमाचल प्रदेश के जिला मंडी के अंतर्गत आने वाले सिराज एवं सुकेत क्षेत्रों की देव संस्कृति के संरक्षण में लोक वाद्य वादकों के योगदान का रहा है |

अनुसंधान प्रविधि

शोधार्थी ने शोध कार्य को पूरा करने के लिए साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है |

सिराज एवं सुकेत क्षेत्रों की देव संस्कृति से जुड़े प्रमुख लोक वाद्य वादक

श्री केहर सिंह (नगारा वादक)

अवनध वाद्यों की श्रेणी में आने वाला 'नगारा' वाद्य हिमाचल प्रदेश के लगभग सभी जिलों में बजाया जाता है, लेकिन जिला कुल्लू ,शिमला ,सिरमौर तथा मंडी में इस लोक वाद्य का प्रयोग काफी ज्यादा मात्रा में देखने को मिलता है | जिला मंडी के सुकेत क्षेत्र के अंतर्गत आने वाली तहसील करसोग के गावं दाडू नाल में जन्मे श्री केहर सिंह जी नगारा वादन के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते है | इनका जन्म 02 जनवरी 1975 को एक बेहद गरीब परिवार में हुआ | आपके पिता श्री देवी राम जी एक उच्च श्रेणी के नगारा वादक रहे हैं और आपके पूर्वजों से लेकर कई पीढियां लगातार नगारा वादन करती आ रही है | इसलिए आपको बच्चपन से ही घर में सगीत का मौहल मिला आप शिक्षा के क्षेत्र में तो आगे नहीं बढ़ सकें, इसलिए आपने इस कला को ही अपने जीवन यापन का जरिया बना दिया | आपके परिवार के बुजुर्ग कई वर्षों से देवता श्री गींह नाग जी के साथ नगारा वादन करते आए हैं ,इसीलिए आपने भी अपना पूरा जीवन देवता जी की सेवा में समर्पित कर दिया | आज लगभग 40 वर्ष हो चुके हैं लेकिन आज भी आप देवता जी के साथ उनकी सेवा में बड़ी ही इमानदारी के साथ लगे हुए हैं | नगारा वादन में आप इतने कुशल वादक हैं कि जब भी कोई आपका नगारा सुनता है तो मंत्रमुग्ध हो जाता है | देव संस्कृति से जुडी कुछ चीजें ऐसी हैं जो आपके बगैर अधूरी हैं | ऐसा मानना है कि देवता जी के मुख्य 'गूर' के अंदर देवता जी तभी प्रकट होते है जब तक लोक वाद्यों का वादन न हो , देवता जी के स्नान या आरती के समय भी आपका नगारा वादन सुनने को बहुत कर्णप्रिय लगता है | देव संस्कृति के प्रचार प्रसार में आप अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं | देवता जी के साथ -साथ आप अनेक कार्यक्रमों में भी अपना नगारा वादन करते हैं |

वर्ष 2019 में जिला स्तरीय नलवाड मेला जो की करसोग में मनाया जाता है ,इस मेले में आपको और आपकी पूरी टीम को लोक वाद्य यंत्र प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ | आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के माध्यम से आपको अनेकों बार कई स्थानों पर अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करने का मौका प्राप्त हुआ | आप हमेशा देव परम्परा से जुडी हुई प्राचीन पारम्परिक तालों का वादन करते हैं और देव संस्कृति को संजोये रखने में अहम भूमिका निभाते हैं |

श्री हेमराज (ढोल वादक)

श्रीमान हेमराज जी का जन्म 25 जनवरी 1981 को गाँव व् डाकघर बागाचनौगी तथा उप तहसील बागाचनौगी जिला मंडी हिमाचल प्रदेश के अंतर्गत एक गरीब परिवार में हुआ | आपके पिता जी श्री वेद राम जी सिराज क्षेत्र के सर्वश्रेष्ठ शहनाई वादक हैं ,और वर्तमान समय में सिराज क्षेत्र के बड़ा देव के नाम से प्रसिद्ध देवता श्री विष्णु मतलोडा जी के साथ शहनाई वादन कर रहे हैं | बाल्यकाल से घर में सांगीतिक माहौल होने की वजह से संगीत की तरफ आपका रुझान बढ़ता चला गया | बच्चपन से ही आपकी रूचि गायन में न होकर लोक वाद्यों की तरफ ज्यादा बढती चली गई | इसलिए आपने ढोल वाद्य को सीखना शुरू कर दिया | धीरे -धीरे सभी तरफ आपकी प्रसिधी बढ़ती चली गई और आपने इस कला को अपनी आजीविका कमाने का साधन बना दिया | आपके पूर्वजों की देवताओं के प्रति अटूट आस्था होने की वजह से आपने भी देवसंस्कृति को अपने अंदर आत्मसात कर लिया | वर्तमान समय में आप देवता श्री सुमुनाग नगल्वानी जी के मुख्य बज्न्त्रयों में से एक हैं | पुरे वर्ष भर देवता जी जहाँ -जहाँ भी आते -जाते हैं तो आप देवता जी के साथ अपनी उपस्थिति ज़रूर दर्ज कराते हैं | देव कार्यों में ढोल वाद्य के साथ -साथ शादी ब्याह तथा दुसरे तीज त्योहारों में भी आप अनेक कार्यक्रमों में ढोल वादन करते हैं | आप ढोल पर अनेक तरह के पारम्परिक लोक तालों को बखूबी बजाते है और अपने वादन के माध्यम से देव संस्कृति तथा लोक संस्कृति को आगे बढाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं |

श्री सूरत राम (करनाल वादक)

सिराज के अंतर्गत आने वाले छतरी क्षेत्र के अराध्य देव श्री मगरू महादेव जी के प्रमुख बज्न्त्रियों में से एक श्रीमान सूरतराम जी करनाल वाद्य से जुड़े हैं | सूरत राम जी का जन्म 15 मार्च 1955 को बरेयोगी नामक स्थान में हुआ | इनके पिता का नाम स्वर्गीय श्री वृकम राम जो पेशे से किसान थे | सूरत राम जी ने अपना बच्चपन बड़ी गरीबी में व्यतीत किया | हरिजन परिवार में जन्म लेने के कारण समाज के लोग भी बड़ी हीन भावना से देखते थे, बस यही बात सूरत राम जी के जेहन में घर कर गई और उन्होंने अपने आपको समाज में आगे लाने के लिए दिन रात मेहनत करना शुरू कर दिया | अपने पिता जी से करनाल वाद्य को बजाने का हुनर सीखना इनके जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन लेकर आया | क्यूंकि कुछ ही समय के बाद आपकी कला की प्रसिद्धी चारों तरह फ़ैल गई | आपके अंदर छिपे हुनर को तब पंख मिले जब देवता श्री मगरू महादेव कमेटी ने आपको देवता जी के साथ स्थाई रूप से करनाल वादक के रूप में रखा | साल भर देवता जी के जो भी पर्व ,मेले या देवता जी जब अपनी हारों के फेर में जाते हैं तो हमेशा ही आपकी उपस्थिति रहती है |

कभी-कभी सूरतराम जी श्री मगरू महादेव जी के अलावा क्षेत्र के दुसरे देवताओं जैसे श्री बुढा पिंगल ,देवता श्री चप्लांदु नाग ,देवता श्री गाडा बताल इतियादी के साथ भी जाकर अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं | इसके अलावा सूरतराम जी अनेक त्योहारों जैसे शिवरात्रि ,होली ,बैसाखी इत्यादि के समय क्षेत्र में होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं | करनाल वादन के साथ -साथ लोक वाद्यों जैसे ढोल ,नगारा ,खंजरी ,ढोलक इतियादी को बनाने का कार्य भी बखूबी करते हैं | सूरतराम जी देव परम्परा में होने वाले अनेक देव कार्यों में अपने करनाल वादन से सभी को मंत्रमुग्ध करते है और इस परम्परा को नई पीढ़ी को भी सिखा रहे है और देव संस्कृति के संरक्षण में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं |

श्री दीवान चन्द (शहनाई वादक)

लोक कला और लोक संगीत के प्रचार -प्रसार एवं संरक्षण में हिमाचल के अनेकों कलाकार अपना महत्वपूर्ण योगदान निभाते आ रहे हैं | लोक संस्कृति की अनुपुम झलक देव संस्कृति के माध्यम से देखने को मिलती है | सिराज क्षेत्र की उप तहसील छतरी के एक छोटे से गाँव चुहन डाकघर छतरी के रहने वाले प्रसिद्ध संगीतकार श्रीमान दीवान चन्द जी एक उच्च कोटि के शहनाई वादक हैं | आपको विरासत में ही लोक संगीत की तालीम मिलनी शुरू हुई, क्यूंकि आपके पूर्वज लोक वाद्य यंत्रों को बनाने में पारंगत थे | आपके घर में अच्छे -अच्छे शहनाई वादकों का आना जाना लगा रहता था | शहनाई वाद्य को सूनकर इनके मन में भी इस वाद्य के प्रति काफी ज्यादा लगाव बढ़ गया | इसलिए अपने पिता और दादा जी से इस वाद्य को सीखना शुरू कर दिया | कुछ ही समय के बाद आप एक बहुत अच्छे शहनाई वादक बन गये चारों तरफ आपकी प्रसिधी होनी शुरू हो गई और देवताओं के साथ आपने वादन करना शुरू कर दिया | वर्तमान समय में आप अराध्य देवता श्री मगरू महादेव जी के मुख्य बज्न्त्रियों में शामिल है | देवताओं के मेले ,देवता से जुड़े सभी प्रकार के कार्यक्रमों में आपका वादन सभी को मंत्रमुग्ध कर देता है |

हर वर्ष मगरू महादेव जी की पालकी के साथ मंडी की महाशिवरात्रि में भी आप भाग लेते हैं और अपनी शहनाई की मधुर धुनों से पुरे वातावरण को सराबोर कर देते हैं | देव परम्परा से हमेशा जुड़े रहने का प्रतिफल आपको उस समय प्राप्त हुआ जब आपके पुत्र में दैविक शक्तियों का आना शुरू हुआ और देवता जी के 'गूर' के रूप में स्थान प्राप्त हुआ | प्रसिद्ध शहनाई वादक दीवान चन्द जी देव आस्था के सिवा दुसरे अनेक कार्यक्रमों में भी अपना वादन करते है | वर्तमान समय में आप अनेकों शिष्यों को इस सुषिर वाद्य की तालीम दे रहें हैं और देव परम्परा से जुडी संस्कृति के संरक्षण में अहम योगदान निभा रहे हैं |

दौलत राम (रणसिंगा वादक)

सिराज क्षेत्र की दूर दराज ग्राम पंचायत बरयोगी के महरुटी गाँव में जन्मे श्री दौलत राम जी का जन्म 16 मार्च 1946 में एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ | इनके पिता का नाम स्वर्गीय श्री घोली राम तथा माता का नाम स्वर्गीय श्रीमती हरजू देवी है | आपकी प्रारंभिक शिक्षा प्राथमिक पाठशाला रूहमणी में हुई | घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने की वजह से अप अपनी आगे की पढ़ाई को जारी नहीं रख सके ,और बहुत छोटी सी उम्र से ही अपने माता पिता जी के साथ घर के कामों में हाथ बंटाना शुरू कर दिया | बाल्यकाल से ही दौलत राम जी नृत्य के बड़े शौकीन थे | गाँव में होने वाले सभी कार्यक्रमों में जसे मेला ,शादी -ब्याह ,धार्मिक कार्यक्रमों में बढ़ चदकर भाग लेते थे | जिस क्षेत्र में आपका जन्म हुआ उस पुरे क्षेत्र में प्राचीन काल से ही देवी -देवताओं के प्रति लोगों की बहुत गहरी आस्था जुडी हुई है | इसी देव आस्था का बहुत गहरा प्रभाव आपके उपर भी पड़ा , आप अपने गाँव के इष्ट देव श्री बुढा पिंगल मटलासरी जी के साथ ऐसे जुड़ गये कि साल भर देवता जी से सम्बंधित सभी कार्यों में आप जरूर शामिल होते हैं | लोक संगीत की तरफ आपका रुझान शुरू से ही था लेकिन समय के साथ -साथ आपका ये लगाव और बढ़ता चला गया | देवता के साथ लोक वाद्यों की गूंज आपके अंतर्मन को आनंदित कर देती और यही बात आपके मन में घर कर गई कि क्यों न इन लोक वाद्यौं को बजाना

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

सिख लिया जाए | इसीलिए आपने रणसिंगा वाद्य को बजाना सीखना शुरू कर दिया और कुछ ही समय में आपने इस वाद्य को आत्मसात कर लिया | वर्मान समय में आप देवता श्री बुढा पिंगल मटलासरी जी के प्रमुख बज्न्त्रयों में से एक हैं | देव परम्परा से सम्बन्धित कोई भी कार्य होता है जैसे देवता जी का फेर ,झाड़ा ,प्लेच ,देओजी, जाच ,गनैई,आरती ,स्नान इतियादी सभी कार्यों में आपके द्वारा सबसे पहले रणसिंगा वाद्य बजाया जाता है जो ये सूचित करता है की कार्य को शुरू किया जाए | आप एक उच्च कोटि के ढोल वादक भी हैं और इसके साथ -साथ आप एक अच्छे गायक भी आपके द्वारा अनेक प्रकार के लोकगीत ,नैणी ,भोंरू ,बामनु इतियादी की रचना की गई है |

लेकिन आपकी प्रसिधी ज्यदातर रणसिंगा वाद्य के लिए हुई क्यूंकि आपने इस सुषिर लोक वाद्य के प्रचार प्रसार में अहम योगदान दिया | ये बात भी सत्य है की इस वाद्य को आप अपनी रोजी रोटी कमाने का साधन नहीं बना सके क्यूंकि देव आस्था से जुड़े कार्यक्रम वर्ष में बहुत कम होते है तो इससे घर का गुजर बसर नहीं हो पा रहा था इसीलिए आपने मगरू गला नामक स्थान के पास अपना एक छोटा सा ढाबा चलाना शुरू कर दिया | मगरूगला एक ऐसा स्थान है जहाँ सर्दियों के दिनों में काफी ज्यादा मात्रा में बर्फ गिरती है जिससे आने जाने के सारे रास्ते बंद हो जाते है तो ऐसे में दौलत राम जी सभी राहगीरों को खाने पीने तथा रहने की सुविधा प्रदान करते हैं | आप एक विलक्षण बुधि के व्यक्ति हैं आप रणसिंगा वाद्य के वादन के साथ -साथ अनेक तरह के लोक वाद्यों को बजाने का काम भी बड़ी ही कुशलता के साथ करते हैं | आप इस परम्परा को आने वाली पीढ़ी को भी सिखा रहे हैं | देव परंपरा के संरक्षण व् संवर्धन के लिए आपका योगदान बहुत महत्वपूर्ण है | आपको अनेक मेलों चाहे वो जिला स्तर के हो या राज्य स्तर के हो सभी में अनेकों पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है |

श्री तन्ना राम (गुझु वादक)

अवनध वाद्यों की श्रेणी में वैसे तो अनेकों लोक वाद्य यंत्र आते हैं लेकिन सिराज एवं सुकेत क्षेत्र में बहुत ही ज्यादा लोकप्रिय वाद्य नगारे तथा ढोल के बाद अगर किसी लोक वाद्य का नाम आता है तो वो एक मात्र लोक वाद्य 'गुझु' है | इस लोक वाद्य की मधुर ध्वनि सुनने में बहुत ज्यादा कर्णप्रिय होती है | इस लोकवाद्य का प्रयोग सिराज एवं सुकेत दोनों क्षेत्रों में देव परम्परा के साथ काफी ज्यादा मात्रा में किया जाता है |

तहसील करसोग के एक छोटे से गाँव शाहल डा० पांगना में जन्मे श्री तन्नाराम का 'गुझु' नामक लोक वाद्य को बजाने के क्षेत्र में बहुत बड़ा नाम है | आपका जन्म 4 जनवरी 1951 को एक बेहद गरीब परिवार में हुआ | आपके पिता जी स्वर्गीय श्री धारी राम जी जो लोहार जाति से सम्बन्ध रखते थे ,वो सरेई नाग जी के बजंतरियों में से एक थे | इसलिए आपको लोक संगीत की तालीम विरासत के रूप में प्राप्त हुई | आपके पिता जी ने जब आपके अंदर सांगीतिक गुणों को महसूस किया तो उन्होंने विधिवत रूप से ही आपको 'गुझु' वादन की शिक्षा देनी शुरू कर दी थी | कुछ ही समय के बाद आप एक अच्छे 'गुझु' वादक के रूप में प्रसिद्ध होने लग गये | पिछले लगभग 50 वर्षों से आप देवता श्री सरेई नाग जी के साथ जुड़े हुए हैं और देव परम्परा से जुड़ने के बाद आप देव संस्कृति के प्रचार -प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं | देवता के प्रमुख बजंतरियों में आपका नाम होना ही आपकी विलक्षण प्रतिभा को दर्शाता है | वर्तमान समय में इस लोक वाद्य के वादक कलाकार बहुत कम रह गए हैं लेकिन फिर भी आप नयी पीढ़ी को इस वाद्य के प्रति प्रेरित करने में अथक प्रयास कर रहे हैं | देवता जी से सम्बंधित कोई भी देव कार्य जब होता है तो आपका 'गुझु' वादन सभी को मंत्रमुग्ध कर देता है | आप इस लोक वाद्य को केवल मात्र बजाते ही नहीं है बल्कि आप इस वाद्य को खुद बनाकर तैयार भी करते हैं | दो लकड़ी की डंडियों से बजने वाला यह वाद्य आकार में काफी छोटा और हल्का होता है इसीलिए इस वाद्य को गले में लटकाकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाना काफी आसान होता है | इस 'गुझु' नामक लोक वाद्य को दोनों हाथों से एक समान बजाया जाता है | सिराज एवं सुकेत की देव परम्परा में इस लोक वाद्य का अपना एक विशेष महत्व है | देवता जी के अलावा आप समाज में होने वाले अनेक प्रकार के कार्यक्रमों में भी अपना वादन करते है और अपना जीवन यापन करते हैं |

निष्कर्ष

जिला मंडी को छोटी काशी इसलिए भी कहा गया है क्यूंकि इस जिले के हर गाँव में किसी न किसी देवी -देवता का मंदिर जरूर पड़ता है इसकी वजह से यहाँ बसने वाले लोगों की देवी -देवताओं के प्रति काफी आस्था रहती है | इसी तरह से अपनी विशिष्ठ लोक परम्पराओं ,धार्मिक आस्थाओं तथा समृद्ध सांस्कृतिक धरोहरों को संजोये रखने के लिए सिराज एवं सुकेत क्षेत्रों की देव संस्कृति अपना विशेष महत्व रखती है | इन दोनों क्षेत्रों के लोक संगीत से सम्बंधित लोक वाद्य केवल मात्र मनोरंजन का ही साधन नहीं होते बल्कि उन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के सामाजिक ,धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन का महत्वपुर्ण अंग होते है | इन क्षेत्रों में प्रयोग होने वाले लोक वाद्य जैसे ढोल ,नगारा, करनाल ,रणसिंगा ,शहनाई यहाँ की देव परम्परा के साथ काफी करीब से जुड़े हुए हैं और इनके वादन के साथ ही चारों तरफ का वातावरण मधुर ध्वनियों से गूंज उठता है|

इन दोनों क्षेत्रों के लोक वाद्य वादक अपनी असाधारण प्रतिभा ,कई वर्षों का प्राप्त ज्ञान और अपनी कठिन साधना से देव संस्कृति के सरक्षण में अपनी अहम भूमिका अदा करते हैं | ये सभी लोक वाद्य वादक कई दशकों से पीढ़ी दर पीढ़ी देव आस्था के अनुसार देव मेलों ,धार्मिक अनुष्ठानों ,वर्ष भर चलने वाले तीज- त्योहारों एवं अन्य कार्यक्रमों में अपनी प्रमुख भागीदारी दर्ज करते हैं | वर्तमान समय में हमारी देव संस्कृति के उपर पाश्चात्य संस्कृति का काफी ज्यादा प्रभाव पड़ा है लेकिन सिराज एवं सुकेत का ज्यादातर क्षेत्र ग्रामीण है इसीलिए यहाँ लोक वाद्य वादक आज भी अपनी समृद्ध देव संस्कृति को बचाने में हमेशा प्रयासरत हैं | इस अध्ययन से हमे यह ज्ञात होता है कि अगर इन सभी लोक वाद्य वादकों को उचित प्रोत्साहन ,उचित मानदेय तथा उचित सम्मान दें तो ये लोक वाद्य वादक अपनी समृद्ध देव संस्कृति को सुरक्षित रखने तथा उसका प्रचार -प्रसार करने में महत्वपूर्ण योगदान देंगे | इसलिए समाज में रहने वाले लोगों तथा सरकार व् शैक्षणिक संस्थानों की जिम्मेवारी है कि देव संस्कृति तथा लोक संस्कृति को बचाने वाले लोक वाद्य वादकों के प्रति सकारात्मक कदम उठाये जांए | ताकि हमारी देव संस्कृति आने वाले समय में जीवित रह सके |

संदर्भ ग्रन्थ

1. वर्मा चमन लाल, (1999), मंडियाली सांस्कृतिक एवं सांगीतिक अध्ययन ,निर्मल पब्लिकेशन्स दिल्ली |
2. पाल वीरेंद्र (1989), मंडी जिला के व्यवसायिक लोगों का लोक संगीत (अप्रकाशित दर्शन निष्णात शोध प्रबंध), संगीत विभाग ,हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय समरहिल शिमला हि०प्र० |
3. सेन ठाकुर (2016) कुल्लू जनपद की देव परम्पराओं में अनुसूचित जातियों के सांगीतिक योगदान का मूल्यांकन ,हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय समरहिल शिमला हि० प्र० |

4 मिश्र डॉ लालमणि ,भारतीय संगीत वाद्य ,भारतीय ज्ञानपीठ कनाट प्लेस ,नई दिल्ली -110001

साक्षात्कार

1 . श्री केहर सिंह गाँव दाडू नाल डाकघर पांगना तहसील करसोग जिला मंडी हि०प्र० से साक्षात्कार द्वारा दिनांक 22 फरवरी 2026 को जानकारी प्राप्त की गई |
2 . श्री हेमराज गाँव व डा० बागाचनौगी तहसील थुनाग जिला मंडी हि०प्र० से दिनांक 02 मार्च 2026 को जानकारी प्राप्त की गई |
3 . श्री सूरत राम गाँव बरयोगी डा० रूहमणी तहसील थुनाग जिला मंडी हि०प्र० से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी दिनांक 06 मार्च 2026 .
4 . श्री दीवान चन्द गाँव चुहन डा० छतरी उप तहसील छतरी जिला मंडी हि० प्र० से दिनांक 09 मार्च 2026 को साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी |
5 . श्री दौलत राम गाँव महरुटी डा० रूहमणी तहसील थुनाग जिला मंडी हि० प्र० से दिनांक 10 अप्रैल 2026 को साक्षात्कार द्वारा जानकारी प्राप्त की गई |
6 . श्री तन्ना राम गाँव शाहल डा० पांगना तहसील करसोग जिला मंडी हि० प्र० से साक्षात्कार द्वारा दिनांक 22 अप्रैल 2026 को जानकारी प्राप्त की गई |